'Give instruction to a wise Man, and he will be yet Wiser; teach a just man, and he will increase in learning.'

Prov. 9 : 9.

डॉ.पांडुरंग पाटील
अध्यक्ष,हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६ ००४।

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि कु.सुलक्षणा जेम्स बिडारी ने मेरे निर्देशन में "मृदुला गर्ग के "मैं और मैं" उपन्यास का अनुशीलन" लघु-शोध-प्रबन्ध शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर की एम.फिल.उपाधि के लिए लिखा है। यह कार्य पूर्व योजनानुसार संपन्न हुआ है। शोधार्थी ने मेरे सुझावों का पूर्णतः पालन किया है। जो तथ्य प्रबन्ध में प्रस्तुत किये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही तथा मौलिक हैं। मैं संस्तुति करता हूँ कि इसे परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए।

स्थान - कोल्हापुर
२८ दिसम्बर,१९९६

(डॉ.पांडुरंग पाटील)
शोध-निर्देशक

प्रख्यापन

"मृदुला गर्ग के "मैं और मैं" उपन्यास का अनुशीलन" यह लघु शोधप्रबन्ध मेरी मौलिक कृति है जो एम.फिल.(हिन्दी) उपाधि के लिए शोध प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह कृति इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गयी है।

S.J. Bidari

सुलक्षणा जेम्स बिडारी
शोध छात्रा

कोल्हापुर।

तिथि : 2८ दिसम्बर,१९९६

डॉ.पांडुरंग पाटील
एम.ए.,पीएच.डी.
अध्यक्ष,हिन्दी विभाग,
तथा
अध्यक्ष, हिन्दी अध्ययन मण्डल,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।

संस्तुति पत्र

मैं संस्तुति करता हूँ कि इस लघु शोधप्रबन्ध को परीक्षा हेतु अधोषित किया जाये।

तिथि :२८ दिसम्बर,१९९६

कोल्हापुर।

(डॉ.पांडुरंग पाटील)
अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर – ४१६ ००४

-: प्राक्कथन :-

उपन्यास विधा साहित्य की अन्य विधाओं से अधिक लोकप्रिय मानी जाती है। मनुष्य की सभी भावनाओं, विचारों का चित्रण उपन्यास विधा में अधिक हुआ है। उपन्यासों के माध्यम से व्यक्ति को समझा जा सकता है। उपन्यासकार अपने उपन्यास मे समाज की स्थिति के साथ-साथ उसकी गतिविधियों का भी चित्रण करते हैं। उपन्यास में समाज के प्रति अपने कर्तव्यों के साथ-साथ सामाजिक मूल्यों का भी चित्रण होता है। उपन्यासों में मानव जीवन का चित्रण होता है। मनुष्य की विविध भावों का प्रतिबिंब साहित्य है। साहित्य द्वारा मनुष्य अपने विचार, भाव, भावनाओं को उजागर करता है। आधुनिक साहित्यकार मनोवैज्ञानिक शैली में अपना साहित्य लिखकर मानव की भाव-भावनाओं को सैध्दान्तिक रूप में चित्रित कर रहे हैं। फ्रायड़, एड़लर, युंग जैसे महान मनोवैज्ञानिकों ने मनुष्य के मन का गहरा अध्ययन कर "मन" को सिध्दान्तों के आधार पर प्रस्तुत किया है। इसलिए साहित्य को मानव के व्यक्तित्व और उसके जीवन का प्रतिबिंब कहा जाता है।

आठवे दशक की सफल लेखिकाओं में मृदुला जी की अलग पहचान है। मृदुला जी ने कुशलता से नारी मन का चित्रण किया है। उन्होंने नारी मन की गुत्थियाँ सुलझायी है। नारी के बहुआयामी व्यक्तित्व को अपने उपन्यासों में मार्मिक ढंग से चित्रित किया है। आधुनिक नारी के जीवन में आनेवाली समस्याएँ तथा इन समस्याओं के कारण बनी उसकी मानसिकता का चित्रण मृदुला जी ने अपने साहित्य में किया है। आधुनिक युग में बदलते परिवेश के कारण नारी की बदलती मान्यताएँ एवं विश्वास के कारण बदलते आचार-विचारों को उन्होंने सफलतापूर्वक अपने साहित्य में प्रस्तुत किया है।

मृदुला जी के साहित्य में जो समस्याएँ चित्रित हुई हैं वे अधिकतर मनोवैज्ञानिक हैं। उनका प्रस्तुतिकरण भी मनोवैज्ञानिक शैलियों में हुआ है। उनके साहित्य पर मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का प्रभाव रहा है। मृदुला जी जैनेंद्र जी को गुरुबन्धू के रूप में मानती है। मृदुला जी ने यौन-जीवन का साहसपूर्ण चित्रण किया है।

मनोवैज्ञानिकों ने स्पष्ट किया है कि मानव का मन बड़ा जटिल एवं चंचल होता है। मानव के व्यक्तित्व संगठन में उसी मनोवृत्तियों का प्रभाव रहता है। मनुष्य ने अपनी बुद्धि के सहारे भौतिक जीवन में उन्नति की है, परन्तु उसका भावनिक पक्ष उतनी उन्नति नहीं कर सका है। इसी कारण उसका मानसिक संतुलन बिगड़ता है। मानसिक संतुलन बिगड़ने से अनेक मनोग्रांथियों से वह ग्रस्त होता है। मनुष्य की यह मानसिक रुग्णता साहित्य में भी चित्रित होती है।

मृदुला जी के सम्पूर्ण साहित्य में मनोवैज्ञानिक समस्याएँ उजागर हुई हैं। इनमें भी नारी समस्याएँ मनोवैज्ञानिक शैली में प्रस्तुत की है। उपन्यास, कहानी संग्रह आदि साहित्य में उन्होंने नारी समस्या, बदलता नारी जीवन चित्रित किया हे। मृदुला जी का "मैं और मैं" उपन्यास काफी लोकप्रिय रहा है। यह उनका निहायत ही आत्मकेंद्रित पात्रोंवाला उपन्यास है। इस उपन्यास में लेखिका ने लेखकीय जीवन की झलक प्रस्तुत की है। "मैं और मैं" उपन्यास में लेखन और लेखक के बीच की समस्या के साथ-साथ मनुष्य की प्रवृत्तियों का भी चित्रण किया है। बहुचर्चित उपन्यासों में से "मैं और मैं" यह एक महत्त्वपूर्ण उपन्यास है।

मैंने एम.फिल की उपाधि के लिए मृदुला जी का साहित्य पढ़ना आरंभ किया। सभी साहित्य मनोवैज्ञानिक होने के कारण फ्रायड़, एड़लर, युंग आदि मनोवैज्ञानिकों का साहित्य भी पढ़ना मैंने प्रारंभ किया। मृदुला जी के सभी साहित्य में से "मैं और मैं" उपन्यास को अध्ययन के लिए चुन लिया। बहुचर्चित उपन्यास "मैं और मैं"

में नारी मन के साथ-साथ "खंड़ित व्यक्तित्व" की समस्या को उन्होंने उजागर किया है। व्यक्ति के अहम् के कारण निर्माण समस्या भी चित्रित की है। अहम् की भावना सभी को होती है। प्रस्तुत उपन्यास का शीर्षक ही अहम् दर्शाता है। अहम् के कारण मनुष्य की हुई स्थिति, समस्याएँ आदि पढ़ने के पश्चात् मैंने तय किया कि मनोविज्ञान के सहारे मनुष्य की मानसिक स्थिति के साथ उसके व्यक्तित्व के अहम् को सैद्धान्तिक रूप में समझा जायें।

प्रस्तुत उपन्यास का प्रमुख पात्र कौशल खंड़ित व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत हुआ है। "खंड़ित व्यक्तित्व" क्या होता है यह जानने की जिज्ञासा थी। इसलिए मैंने मृदुला जी के "मैं और मैं" उपन्यास पर लघु शोध-प्रबन्ध लिखने का निश्चय किया।

मृदुला जी का "मैं और मैं" उपन्यास पढ़ते समय निम्नलिखित प्रश्न उपस्थित हुये, उन्हीं प्रश्नों का हल ढुँढने का प्रयास किया है -

१. मनुष्य की मानसिकता क्या होती है तथा मनुष्य की मानसिकता पर परिस्थितियों के प्रभाव का परिणाम क्या होता है?

२. मनुष्य में विकृतियाँ क्यों निर्माण होती है ?

३. मनुष्य का अहम् उसे कहाँ ले जाता है ?

४. मनुष्य का व्यक्तित्व खंड़ित क्यों होता है ?

अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने ६ अध्यायों में विभाजित किया है।

<u>प्रथम अध्याय</u> : "मृदुला गर्ग : व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

स्वनाकार के व्यक्तित्व का उसके साहित्य पर प्रभाव रहता है। इसलिए प्रथम अध्याय में लेखिका के परिचय के साथ उनके विचारों को प्रभावित करनेवाले

व्यक्ति तथा घटनाएँ प्रस्तुत की है। उनके कृतित्व में उनके सम्पूर्ण साहित्य के साथ उनकी बहुचर्चित कृतियाँ, पुरस्कार से सम्मानित कृतियों का उल्लेख किया है।

द्वितीय अध्याय : "मैं और मैं" उपन्यास की कथावस्तु का अनुशीलन"

इस अध्याय में उपन्यास की कथावस्तु के साथ कथावस्तु का उपन्यास के तत्वों के अनुसार अनुशीलन प्रस्तुत किया है।

तृतीय अध्याय : "मैं और मैं" उपन्यास में चित्रित मनोवैज्ञानिकता"

इस अध्याय में मैंने उपन्यास के दो प्रमुख पात्र - माधवी और कौशल की मानसिकता स्पष्ट करने का प्रयास किया है। मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के आधार पर पात्रों की मानसिकता स्पष्ट की है। प्रस्तुत उपन्यास में कौशल खंड़ित व्यक्तित्व के रूप में चित्रित है, इसलिए इस अध्याय में व्यक्तित्व खंड़ित बनने के कारण भी प्रस्तुत किये हैं।

चतुर्थ अध्याय : "मैं और मैं" उपन्यास में चित्रित समस्याएँ"

इस अध्याय में मैंने समाज की विविध समस्याओं को चित्रित किया है। सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक समस्याओं के साथ मनोवैज्ञानिक क्षेत्र की विफलता (Frustration) और अहम् (Ego) इन दो समस्याओं को भी प्रस्तुत किया है।

पंचम अध्याय : "मैं और मैं" उपन्यास में प्रस्तुति शिल्प"

इस अध्याय में प्रस्तुत उपन्यास का प्रस्तुति-शिल्प प्रस्तुत किया है। इसमें उपन्यास की तथा प्रयुक्त शैलियों को चित्रित किया है।

उपसंहार : उपसंहार में उपन्यास का अध्ययन करने के पश्चात प्राप्त निष्कर्षों के माध्यम से उपस्थित प्रश्नों के उत्तर प्रस्तुत किये हैं। साथ ही लघु-शोध प्रबन्ध की उपलब्धियाँ और अनुसंधान की नई दिशाएँ प्रस्तुत की हैं।

ऋण-निर्देश :

मैं सबसे पहले प्रभु ईसा मसीह को धन्यवाद देना चाहूँगी। उनकी योजना के बगैर मैं यह लघु-शोध प्रबन्ध पूरा नहीं कर पाती।

मेरे माता-पिता, नम्रता, सीमा, रिचर्ड और सौ.सुप्रिया के प्रोत्साहन के बगैर यह कार्य पूरा करना मेरे लिए असंभव था।

मैं विशेष धन्यवाद मेरे निर्देशक डॉ.पांडुरंग पाटील जी को देना चाहुँगी। उन्होंने इतनी व्यस्तता के बावजूद भी मेरे लेखन में सहायता की। मेरी अनेक गलतियों को दुरुस्त किया। साथ ही उनके परिवार के सदस्यों के प्रति भी कृतज्ञता प्रकट करना चाहूँगी।

उपन्यास लेखिका श्रीमती मृदुला गर्ग जी का भी शुक्रिया अदा करती हूँ। उन्होंने उपन्यास संबंधी जानकारी उपलब्ध करायी तथा उनके उपन्यास का अनुशीलन करने की इजाजत दी।

मैं डॉ.सौ.मेरी रुकडीकर जी को भी धन्यवाद देती हूँ। उन्होंने मनोविश्लेषण के बारे में शास्त्रीय जानकारी देकर मेरी अधिक मदद की है।

मै डॉ.अर्जुन चव्हाण सर का भी शुक्रिया अदा करती हूँ। मैं हिन्दी विभाग के सभी सदस्यों को भी धन्यवाद देती हूँ। बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय के सभी सदस्यों के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करती हूँ। मेरी सारी सहेलियों के प्रोत्साहन के प्रति मैं सदैव कृतज्ञ रहूँगी। शेख मॅडम तथा उनके परिवार के सदस्यों के प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ।

टंकलेखनकर्ता श्री.भोसले का भी शुक्रिया अदा करती हूँ।

अंत में सभी हितचिंतकों को भी धन्यवाद देती हूँ।

कोल्हापुर
27 दिसम्बर, १९९६

S.J. Bidari
(सुलक्षणा बिडारी)
शोध छात्रा